Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.13-15

बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्रापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन (ग्वालियर शहर मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में)

डॉ. राजकरण सिंह, सहा. प्राध्यापक
माधव महाविद्यालय (शिक्षा), ग्वालियर मध्यप्रदेश भारत।

सार

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। मनोवैज्ञानिक इस तत्त्व को सामूहिकता की मूल–प्रवृत्ति के रूप में देखते हैं। समाज में व्यक्ति का जन्म होता है। समाज में उसका पालन–पोषण होता है, समाज में उसकी शिक्षा–दीक्षा होती है। समाज में रहकर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। समाज में उसकी उन्नति होती है। अतः समाज की आवश्यकता, माँग, आदर्श आदि को आधार बनाकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण करना आवश्यक है, तभी हम व्यक्ति को एक सामाजिक रूप से कुशल व्यक्ति बनाने में समर्थ हो सकते हैं। बाहरी चोर व आक्रांताओं से तो संगठित होकर लड़ा जा सकता है किन्तु जब घर में ही अस्तित्व को मिटाने के लिए लोग तत्पर हों तो कठिनाई बढ़ जाती है। आज मूल्य आधारित प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली इसी चक्रव्यूह में जकड़ी हुई है जिसे तोड़कर ही भारत अपने परम वैभव व 'विश्व गुरू' की छवि को प्राप्त कर सकता है। भारतीय मूल्य आधारित शिक्षा ही ''मानव'' तैयार करने में सक्षम है। जो कि विवेक, विनय, अहिंसा, तप और विश्व बन्धुत्व जैसे मूल्यों की रक्षा कर सकती है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को पुनः अनुप्रमाणित करना है तो पाश्चात्य दर्शन के खोखले प्रत्ययों के स्थान पर वैदिक संस्कृति के सभी प्राचीन मूल्यों एवं तत्वों को जीवित रखना होगा।

मुख्य शब्द– आरक्षित वर्ग, अनारक्षित वर्ग, शोध के उद्देश्य, न्यायदर्श

सामान्यतः शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया माना गया है, किन्तु भारतीय जीवन दर्शन और परम्पराओं में शिक्षा मात्र जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया न होकर जन्म–जन्मान्तर तक चलने वाली प्रक्रिया के रूप में जानी समझी जाती रही है। यदि भारतीय शिक्षा के मूल में देखा जाये तो अवधारणा स्वरूप शिक्षा का उद्देश्य निकलता है ''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् शिक्षा को मुक्ति प्रदान करने वाली प्रक्रिया माना गया है जिसका आधार है शिक्षा जन्म–मरण से मुक्ति प्रदान कराती है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही शिक्षा अथवा विद्या का स्वरूप अत्यन्त ज्ञानपरक, सुव्यवस्थित व सुनियोजित था जिसमें व्यक्ति के लौकिक और पारलौकिक जीवन के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी। वस्तुतः ज्ञान और विद्या से व्यक्ति का कर्म और आचरण परिष्कृत हो जाता है और वह व्यक्ति ज्ञान–सम्पन्न होकर देवतुल्य बन जाता है जबकि अज्ञानता अंधकार के समान होती है। प्राचीन काल में अध्यापन योग्यता को एक जन्मजात प्रकृति प्रदत्त योग्यता स्वीकार किया जाता था। परन्तु 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अध्यापकों के शिक्षण एवम शिक्षण पर जोर दिया जाने लगा। अब शिक्षण के बारे में माना जाता है कि इसको करने के लिये शिक्षण कला का सैद्धान्तिक ज्ञान तथा व्यावहारिक कौशल आवश्यक है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में आर्थिक, सामाजिक असमानता व्याप्त थी। इस सामाजिक, आर्थिक असमानता की खाई को पाटने एवं समाज के पिछड़े वर्गों को विकास एवं राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने को लिए भारत सरकार ने भारतीय संविधान में 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था को कर दिया है। इसी प्रकार भारत के विभिन्न प्रान्तों के विश्वविद्यालयों में बी.एड. कक्षा में प्रवेश के लिये जितने स्थान निर्धारित रहते हैं उनमें से संविधान के अनुसार 50 प्रतिशत स्थान पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित रहते होते हैं तथा शेष 50 प्रतिशत स्थान अनारक्षित होते हैं।

भारतीय धर्म ग्रंथों में मूल्यों के लिए 'शील' शब्द अनेक स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है। यह शब्द 'मूल्य' का पर्याय नहीं वरन् 'समीपी' शब्द है। 'शील' सर्वत्र भूषण का कार्य करता है। कहीं–कहीं शील शब्द चरित्र के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। वस्तुतः ''मूल्य'' एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये या त्याग दें। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है।

वर्तमान आधुनिकता की दौड़ में सहयोग उत्तरदायित्व एवं कर्तव्यनिष्ठा, सार्वजनिक सुरक्षा एवं समानता इत्यादि मूल्य जो व्यक्ति के समग्र जीवन में जीने के लिये आवश्यक होते हैं, का स्थान उपभोक्तावाद लेता जा रहा है। आज आधुनिकता की दौड़ में शिक्षक अपने उत्तरदायित्व एवं निष्ठा को भूलता जा रहा है। अतः छात्राध्यापकों के जीवन मूल्यों से सम्बन्धित अध्ययन करना शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य विषय है।

शोध के उद्देश्य–

1. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ–

1. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
2. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
3. बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

अध्ययन का सीमांकन–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्वालियर जिले के शहरी बी. एड. महाविद्यालयों के 500 छात्राध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि–

प्रस्तुत समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यायदर्श–

1. न्यायदर्श के लिए ग्वालियर जिले के 25 शहरी बी. एड. महाविद्यालयों का चयन किया गया है।
2. बी.एड. छात्राध्यापकों का चयन Random Sampling द्वारा किया गया। कुल बी.एड. छात्राध्यापकों की संख्या 500 ली गई है जिसमें 250 आरक्षित वर्ग के तथा 250 अनारक्षित वर्ग के है।

आँकड़ों का संकलन हेतु प्रमाणीकृत मूल्य परीक्षण डॉ. ए. पी. अहलूवालिया एवं डॉ. हरभजन सिंह द्वारा निर्मित अध्यापक मूल्य परिसूची का उपयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं विवरण–

सारिणी संख्या–1: बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सी. आर. मान	सार्थकता 0.05 स्तर
आरक्षित	250	83.82	25.74	0. 033	सार्थक नहीं
अनारक्षित	250	84.35	22.80		

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि यद्यपि बी.एड. कक्षा में अध्ययरत् आरक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों का मध्यमान, अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों के मध्यमान से कम है किन्तु इन दोनों मध्यमानों का सी.आर. मान सार्थक नहीं है। अतः स्पष्ट है कि बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना संख्या–1 ''बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत की जाती है।

सारिणी संख्या–2: बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सी. आर. मान	सार्थकता 0.05 स्तर
आरक्षित	250	83.33	23.33	2.20	सार्थक
अनारक्षित	250	79.43	26.46		

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों का मध्यमान, अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों के मध्यमान से अधिक है तथा इन दोनों मध्यमानों का सी.आर. मान सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना संख्या–2 ''बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकृत की जाती है।

सारिणी संख्या–3: बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सी. आर. मान	सार्थकता 0.05 स्तर
आरक्षित	250	67.64	25.75	0.66	सार्थक नहीं
अनारक्षित	250	65.62	25.58		

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि यद्यपि बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों का मध्यमान, अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों के मध्यमान से अधिक है किन्तु इन दोनों मध्यमानों का सी.आर. मान सार्थक नहीं है। अतः स्पष्ट है कि बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना संख्या–3 ''बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत की जाती है।

बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के छात्राध्यापकों के सामाजिक मूल्यों में समानता है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के बी.एड. छात्राध्यापकों मूल्यों की स्थिति को व्यक्त करते हैं। चूँकि शिक्षक का प्रभाव अपने विद्यार्थियों पर काफी गहरा पड़ता हैं अतः आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण के क्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों का निर्माण हो जो अध्यापकोचित मूल्यों वाले हों। जो अपने मूल्यों से न सिर्फ दूसरों को प्रेरित कर सकें बल्कि राष्ट्र एवं मानवता की सेवा एवं उन्नति में उनको तैयार कर सकें। प्रस्तुत शोध अध्ययन में एक ओर आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के प्राध्यापकों के सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों में समानता दृष्टिगत होती है तो वहीं दूसरी ओर उनके आर्थिक मूल्यों में असमानताएं भी परिलक्षित होती हैं। अतः शिक्षण प्रशिक्षण एवं शिक्षा जगत में व्याप्त इन समानता को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास शिक्षा जगत, सरकार तथा समाज को करना चाहिए जिससे शिक्षा तथा समाज का सकारात्मक विकास हो सके।

संदर्भ ग्रंथ–

1. मिश्र, डॉ. जयशंकर– ''प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास,
2. विष्णु पुराण– 6.5.62
3. त्यागी, डॉ. गुरूसरन दास–''उदीयमान भारत में शिक्षा'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (उ.प्र.)
4. श्रीवास्तव, डॉ. बी.डी.एन.– ''सांख्यिकी एवं मापन'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा (उ.प्र.)
5. गुप्ता, डॉ. एस.पी.–''एडवान्स ऐज्यूकेशनल साइकोलॉजी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद (प्रयागराज) (उ.प्र.)